Roll No.: .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 1

W-3409

M.A.(Fourth Semester) Examination, June-2020

HINDI

Paper - 404

Kathakar Premchand

(Optional Paper)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 85 (For Regular Students)

Minimum Pass Marks : 29

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 34

नोट : **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख अंकित किये गये हैं।

Q.1. निम्नंकित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 17/20

(अ) वैवाहिक जीवन के प्रभात में लालसा अपने गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणों से रंजित कर देती है। फिर मध्याह्न का प्रखर ताप आता है, क्षण–क्षण पर बगुले उठते हैं और पृथ्वी काँपने लगती है। लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने आ खड़ी होती है। उसके बाद विश्राममय संध्या आती है, शीतल और शांत, जब हम थके हुए पथिकों की भाँति दिन–भर की यात्रा का वृत्तांत करते और सुनते हैं तटस्थ भाव से, मानो हम किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे हैं, जहाँ नीचे का जन–रव हम तक नहीं पहुँचता।

(ब) जब कि हम बिना स्वार्थ के कोई काम या कोई बात नहीं करते, यहाँ तक कि माता–पुत्रा–सम्बंध में–गुरू–शिष्य–सम्बंध में–पत्नी–पुरूष–सम्बंध में स्वार्थ का प्राधान्य हो गया है, किसी उच्चकोटि के कवि के लिए दाम्पत्य जीवन की सराहना करना–उसकी तारीकों के पुल बाँधना–शोभा नहीं देता। हम दाम्पत्य सुख के दास हो रहे हैं। हमने इसी को अपने जीवन का लक्ष्य समझ रखा है। इस समय हमें ऐसे व्रतधारियों की, त्यागियों की, परमार्थसेवियों की आवश्यकता है, जो जाति के उध्दार के लिए अपने प्राण तक दे दें । हमारे कविजनों को इन्हीं उच्च और पवित्र भावों को उत्तोजित करना चाहिए।

(स) वह पति को दया–भाव से देखती थी, उसकी त्यागमयी प्रवृत्ति का अनादर न करती थी पर इसका तथ्य न समझ सकती थी। वह अगर सहानुभूति की भिक्षा मांगता, उसके सहयोग के लिए हाथ फैलाता, तो शायद वह उसकी उपेक्षा न करती। अपनी मुठ्ठी बंद करके, अपनी मिठाई आप खाकर, वह उसे रूला देता। वह भी अपनी मुठठी बंद कर लेती थी और अपनी मिठाई आप खाती थी। दोनों आपस में हंसते–बोलते थे, साहित्य और इतिहास की चर्चा करते थे लेकिन जीवन के गूढ़ व्यापारा में पृथक् थे। दूध और पानी का मेल नहीं, रेत और पानी का मेल था जो एक क्षण के लिए मिलकर पृथक् हो जाता था।

Q.2. प्रेमचन्द की जीवन यात्रा परिचय देते हुए उनकी उपन्यास यात्रा पर एक निबंध लिखिए। 17/20

Q.3. "गोदान तक आते–आते प्रेमचंद का आदर्शवाद से पूरी तरह मोहभंग हो जाता है" – इस कथन की समीक्षा कीजिए। 17/20

Q.4. कहानी कला के तत्वों के आधार पर नमक का दारोगा कहानी की समीक्षा कीजिए। 17/20

Q.5. निम्न मे किन्ही दो लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 17/20

(क) जैनेंद्र की कथा–शैली की विशेषताओं रेखांकित कीजिए।

(ख) हिन्दी उपन्यास में अमृतलाल नागर के अवदान को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।